मा० दर्शन 'रत्न' रावण का विद्यार्थियों को संबोधन

ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू अरबी फ़ारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ के इतिहास विभाग के तत्वाधान में एक्सटेंशन लेक्चर।

लखनऊः ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी-फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ के इतिहास विभाग के तत्वाधान में '' अम्बेडकर से विमुख सफाई कामगार समाज उपेक्षित, कारण और मुक्ति '' विशय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। श्री दर्शन 'रत्न' रावण 'आदि धर्म समाज 'आधस' भारत' के संस्थापक एवं वर्तमान अध्यक्ष हैं।

कार्यक्रम का आरम्भ कुरआन मजीद के तिलावत और उसके अनुवाद से हुआ। आयोजित कार्यक्रम में श्री दर्शन ने विद्यार्थियों को बताया कि शहर-गांव से लेकर हमारे घरों तक की सफाई, चमक-दमक व जीवन-शक्ति को बचाए और बनाए रखने के पीछे जिस सफाई कामगार समाज का अगणित श्रम व अतुलनीय बलिदान है वही रात-दिन दुर्गन्ध, गन्दगी के बीच काम करता हुआ अपने फेफड़े, गुर्दे, दिमाग व जीवन को नष्ट करने पर मजबूर है। वह न केवल आज दुर्गम व जानलेवा परिस्थितियों में काम करने को अभिशप्त है बल्कि समाज के निरन्तर शोषण, तिरस्कार व अलगाव का शिकार है।

छात्रों को सम्बोधित करते हुये श्री दर्शन ने कहा कि इन्हे घृणित कार्य करते हुये हम रोज देखते हैं पर हमारी संवेदना जरा भी विचलित नहीं होती। हम समाज को आंतरिक व बाह्य दुश्मनों से बचाये रखने वाले सैनिकों व शहीदों का सम्मान करते हैं परन्तु हमारे पूरे समाज को जिन्दा बचाये रखने वाले इन सफाई मजदूरों का सम्मान नहीं करते। हर साल लगभग २२५०० हजार सीवरमैन सीवर में दम घुटने से मर जाते हैं लेकिन यह न तो कोई बड़ी खबर बनती है न ही संसद में चरचा का विषय ।

वाल्मीकि रामायण पर बोलते हुये रावण जी ने कहा कि दलित दृष्टि से राम-कथा को देखें तो वह उसके आलोचनात्मक पक्ष को अधिक उभारता है, रामायण में ज्यादातर जगह क्षत्रियों और ब्राह्मणों को दलितों का शोषण और वध करते हुये दिखाया गया है। दर्शन जी 'भंगी' शब्द की उत्पत्ति उन तथाकथित नीची जातियों से मानते हैं जो चर्तुवर्ण व्यवस्था को मानने वाले कर्मकाण्डियों द्वारा कराये गये यज्ञ-पूजा को भंग कर देते थे।

रावण जी ने इस विशय पर चर्चा करते हुये कहा कि अम्बेडकर के अनुसार दलित वर्ग, हिन्दू समाज से अलग एक बहिष्कृत वर्ग था। वह दलितों को हिन्दू समाज से अलग कर उनके लिए पृथक निर्वाचन केन्द्रों की मांग करते थे जिससे दलित वर्ग को उसकी अलग पहचान व सम्मान दिला सके।

अन्त में निष्कर्ष देते हुये रावण जी ने कहा कि अम्बेडकर के अनुसार दलितों का उत्थान मानसिक व समाजिक दो स्तरों पर होना चाहिये। एक, मानसिक तौर पर दलित भाई को भी स्वयं का सम्मान करना सीखना होगा व दूसरा अपने भीतर स्वाभिमान को भी बनाये रखना होगा। दर्शन ''रत्न'' रावण ने स्कूल, कलम और बड़े सरकारी पदों पर नियुक्ति ऐसे तीन मार्ग बताये जिन पर चलकर दलित भाईयों में आत्म गौरव का विकास उत्पन्न होगा तथा समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। उनके अनुसार पढ़ाई ही वह रास्ता है जिस के जरिये दलित अपने कौम को यथा योग्य न्याय और सम्मान दिलाने के लिये संघर्ष कर सकते है, पाखण्डियों और जात-पात के ठेकेदारों से लड़ सकते हैं, और अपने भीतर पैठ बना चुकी हीनता से लड़ सकते हैं।

व्याख्यान के बाद सवाल और जवाब का सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें अध्यापकों और छात्रों ने हिस्सा लिया। मोहम्मद अबशारूद्दीन द्वारा संचालित किये गये इस कार्यक्रम से सभी विद्यार्थी तथा ि"क्षक लाभान्वित हुये। अन्त में डॉ० पूनम चौधरी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर इतिहास विभाग ने

धन्यवाद ज्ञापन दिया।इस कार्यक्रम में प्रोफेसर मसऊद आलम फलाही एव विश्वविद्यालय के अध्यापक और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे।